अभियान : अभियानके तहत हजारों मेडिकल छात्रों ने लैब कोट, काले रिबन पहनकर विरोध दर्ज कराया

डॉक्टरों के लिए सड़कों पर 'डॉक्टर'

जागरण संवाद केंद्र, हिसार : तीन सौ से ज्यादा मेडिकल छात्रों ने सोमवार को एकजुट होकर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय से अंडर ग्रेजुएशन (यूजी) और पोस्ट ग्रेजुएशन (पीजी) मेडिकल सीटों की संख्या बराबर करने की मांग की। मेडिकल छात्रों द्वारा शुरू किए गए 'सेव द डॉक्टर' अभियान हिसार के अलावा मुंबई, बैंगलुरु, जयपुर, हैदराबाद, मैसूर और गौवाहाटी में भी इसी दिन आयोजित किया गया। लैब कोट पहने इन डॉक्टरों ने काला रिबन लगाकर हिसार बस स्टैंड से गणेश मार्केट तक पैदल चलते हुए प्रदर्शन किया।

इस आंदोलन के बारे में डॉ. नरेश त्रेहन, सीएमडी, मेदांता ने कहा, कि वे देश में चिकित्सा छात्रों की मौजूदा स्थिति को लेकर काफी चिंतित है। सभी जानते है कि देश में चिकित्सा क्षेत्र में ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों के लिए उपलब्ध सीटें बराबर नहीं है। मेडिकल छात्र और ग्रेजुएट किसी भी तरह से पीजी में सीट पाने के लिए काफी मेहनत करते है। वे बार-बार परीक्षा देते है और इस तरह कई बार अपने लक्ष्य से भटक जाते है।

इस मौके पर सेव द डॉक्टर के नॉर्थ जोन एजीक्यूटिव डॉ. दीप यादव, कोषाध्यक्ष डॉ. देवी प्रसाद शेट्टी सहित मेडिकल छात्र मौजूद थे।

हिसार: मेडिकल छात्रों ने सेव द डाक्टर अभियान के तहत निकाला जुलूस।

13 वर्ष सिर्फ पढ़ाई

हालांकि देश में सर्वाधिक चिकित्सा संस्थान हैं लेकिन पीजी तथा यूजी छात्रों के लिए सीटों की संख्या में काफी असमानता है। उस पर ग्रामीण क्षेत्रों में पोस्टिंग की अनिवार्यता युवा डाक्टरों को प्रभावित कर रही है, क्योंकि वे 13 वर्ष सिर्फ पढ़ने में ही लगा देते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अगर मौजूदा स्थिति आगे भी जारी रही तो हेल्थ केयर सिस्टम का भविष्य भी खतरे में है।

स्नातकोतर शिक्षा अनिवार्य

किसी भी डॉक्टर के लिए विशेषज्ञ बनने के मकसद से चिकित्सा के क्षेत्र में स्नातकोतर शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य है, जिसे पूरा कर वे गाइनोकोलॉजिस्ट, सर्जन, रेडियोलॉजिस्ट आदि बन सकते है।

तो विशेषज्ञ की होगी कमी

ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले समय में वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉक्टरों/सर्जनों के सेवानिवृत होने के बाद देश में विशेषज्ञ डॉक्टरों की और भी कमी हो जाएगी।

प्रभाव तो पड़ेगा ही

आइएमए के महासचिव डॉ नरेंद्र सैनी ने कहा कि 'देश के युवा डॉक्टर अपने उत्पादक वर्ष पढ़ने और जवाब रटने में लगा रहे हैं ताकि उन्हें पीजी सीट मिल सके। देश में विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी को समझना होगा और यह जानना होगा कि किस तरह निकट भविष्य में हम इससे प्रभावित होंगे।

पीजी में 12 हजार सीटें

यूजी पाठ्यक्रमों में करीब 45,600 सीटें हैं, जो एमसीआई के प्रयासों से जल्द ही 50,000 हो जाएगी। लेकिन पीजी के लिए के वल 12,000 सीटें उपलब्ध है, जिन्हें ज्यादातर डॉक्टर चुनना पसंद करते है। उधर अमेरिका जैसे देशों में पीजी तथा फैलोशिप सीटों का आंकड़ा 32,000 है।